नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नक्सलवाद के अंत की ओर बढ़ता देश

प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के कथित महासचिव देवूजी का सरेंडर केवल एक संगठनात्मक घटना नहीं है, बल्कि यह उस लंबे और रक्तरंजित अध्याय के अंत का संकेत है, जिसने दशकों तक भारत के अनेक राज्यों को हिंसा की आग में झोंक रखा था. जिस व्यक्ति पर विभिन्न राज्यों में एक करोड़ रुपये का इनाम घोषित था और जिस पर सैकड़ों सुरक्षाकर्मियों की हत्या में प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका के आरोप हैं, उसका हथियार छोड़ना यह बताता है कि बंदूक की राजनीति की जमीन खिसक चुकी है.

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद से मुक्त करने की जो समय सीमा तय की है, वह अब केवल राजनीतिक घोषणा नहीं रह गई है, बल्कि जमीनी हकीकत का रूप लेती दिख रही है. पिछले एक दशक में नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या में आई भारी कमी इसका प्रमाण है. 2013 में जहां 182 जिले इस समस्या से प्रभावित थे, वहीं अब यह संख्या सिमटकर मुट्ठीभर रह गई है. यह परिवर्तन स्वतः नहीं आया, बल्कि सुनियोजित रणनीति, बेहतर खुफिया तंत्र, स्थानीय पुलिस और केंद्रीय बलों के समन्वय तथा राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण संभव हुआ है. ऑपरेशन कगार जैसे अभियानों ने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य अब हिंसक चुनौती के सामने झुकने वाला नहीं है. अबुजमाड़ जैसे दुर्गम क्षेत्रों में शीर्ष माओवादी नेताओं का मारा जाना और अनेक वरिष्ठ कैडरों का आत्मसमर्पण इस बात का संकेत है कि संगठन वैचारिक और सैन्य दोनों स्तरों पर कमजोर पड़ा है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस पर दिया गया वक्तव्य भी इसी आत्मविश्वास को दर्शाता है कि देश अब माओवादी आतंक के अंतिम दौर से गुजर रहा है. हालांकि, केवल सुरक्षा अभियान ही स्थायी समाधान नहीं हो सकता. यह सच है कि बंदूक के दम पर 'लाल क्रांति' लाने का सपना अब बिखर रहा है, परंतु जिन सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में यह आंदोलन पनपा, उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता.

आदिवासी अंचलों में दशकों तक बुनियादी सुविधाओं का अभाव, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, रोजगार के सीमित अवसर और प्रशासन से दूरी ने असंतोष को जन्म दिया. नक्सली संगठनों ने इसी असंतोष को हथियार बनाया. अब जब सुरक्षा बलों ने इन इलाकों में राज्य की उपस्थिति मजबूत कर दी है, तो अगला और अधिक महत्वपूर्ण चरण विकास का है. सड़कों, मोबाइल नेटवर्क, स्कूलों, आईटीआई और स्वास्थ्य केंद्रों का विस्तार युद्धस्तर पर होना चाहिए. जनजातीय युवाओं को स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार उपलब्ध कराना, वन उपज के लिए बेहतर मूल्य सुनिश्चित करना और कौशल विकास कार्यक्रमों को जमीन पर उतारना समय की मांग है. आत्मसमर्पण करने वाले युवाओं के पुनर्वास की पारदर्शी और प्रभावी नीति भी उतनी ही आवश्यक है, ताकि वे मुख्यधारा में सम्मानजनक जीवन जी सकें.

सरकार ने सुरक्षा मोर्चे पर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है. अब अपेक्षा है कि वही प्रतिबद्धता विकास और विश्वास निर्माण के मोर्चे पर भी दिखाई दे. यदि बंदूक की जगह किताब, बारूद की जगह रोजगार और भय की जगह भरोसा स्थापित हो गया, तो न केवल नक्सलवाद का अंत होगा, बल्कि इन क्षेत्रों का वास्तविक उत्थान भी सुनिश्चित होगा. यही स्वतंत्र भारत की सच्ची विजय होगी. कुल मिलाकर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने खुद की मॉनिटरिंग में नक्सलवाद के सफाए के इस महत्वपूर्ण अभियान को जिस तरह से चलाया, वो प्रशंसनीय है. पिछले एक वर्ष के दौरान अमित शाह अमुमन प्रत्येक महीने छत्तीसगढ़ की यात्रा पर आए हैं. यहां आकर उन्होंने खुद अभियान की समीक्षा की है. जाहिर है यह सब उन्हीं प्रयासों का नतीजा है.

सुको ने बंगाल में तैनात किए न्यायिक अधिकारी

एसआईआर में विसंगति के मामले

सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को यह जिम्मेदारी सौंपी है कि वह न्यायिक अधिकारियों का चयन वर्तमान व रिटायर्ड जिला न्यायाधीशों व अतिरिक्त जिला न्यायाधीशों में से करें, जो न्यायिक अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे वह ही 'तार्किक विसंगति' की श्रेणी के तहत जो मतदाता रखे गए हैं, उनके दावों व आपत्तियों के फैसले करेंगे, खंडपीठ के अनुसार, न्यायिक अधिकारी एसआईआर प्रक्रिया के दौरान दावों व कागजात की समीक्षा करते हुए जो आदेश पारित करेंगे वह सुप्रीम कोर्ट द्वारा पारित आदेश माना जाएगा और एसपी व डीएम को तुरंत उसका पालन करना होगा. बंगाल में एसआईआर के मुकम्मल न होने को लेकर चुनाव आयोग व राज्य सरकार में जबरदस्त टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी.

सुप्रीम कोर्ट ने अपनी 'असाधारण शक्तियों' का प्रयोग करते हुए बंगाल में न्यायिक अधिकारी तैनात करने का निर्देश दिया है, जो एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) के 'तार्किक विसंगति' मामलों को तय करेंगे और उनका फैसला सुप्रीम कोर्ट का फैसला माना जाएगा. यह निर्देश इसलिए दिया गया है ताकि राज्य में मतदाता सूची का एसआईआर तेजी से पूरा हो सके. भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायाधीश जॉयमाल्या बागची और न्यायाधीश विपुल एम. पंचोली की खंडपीठ ने 20 फरवरी को राज्य सरकार की आपत्ति के बावजूद चुनाव आयोग को यह अनुमति दी कि वह 28 फरवरी 2026 को संशोधित मतदाता सूची प्रकाशित कर सकता है, जो कि कुल सूची का 95 प्रतिशत है.

सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार के इस आग्रह को भी स्वीकार नहीं किया कि मतदाता सूची में शामिल किए जाने के दावों पर अंतिम निर्णय इलेक्टोरल रजिस्ट्रेशन ऑफिसर्स (ईआरओ) का होना चाहिए न कि न्यायिक अधिकारियों का. सवाल यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत इस मामले में अप्रत्याशित हस्तक्षेप करने का फैसला क्यों लिया? खंडपीठ के अनुसार, उसे ऐसा इसलिए करना पड़ा क्योंकि बंगाल में चुनाव आयोग व राज्य सरकार के बीच विश्वास के अभाव व असहयोग के कारण 'असाधारण स्थिति' उत्पन्न हो गई थी. खंडपीठ ने कहा, 'अगर कुछ अनपेक्षित कारणों से एसआईआर मुकम्मल नहीं हो पाती है तो उसके परिणाम क्या होंगे, राज्य को इस बात का एहसास होना चाहिए.' अगर मतदाता सूची समय पर तैयार नहीं होगी तो राज्य में समय पर विधानसभा चुनाव नहीं हो पाएंगे और केंद्र को बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करने का बहाना मिल सकता है. क्योंकि वह ममता बनर्जी को कार्यवाहक सरकार चलाने का मौका तो देने से रहा, उसके लिए तो राज्यपाल के जरिए शासन करना अधिक लाभकारी होगा.

चुनाव आयोग ने 17 राज्यों व 5 केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य चुनाव अधिकारियों को पत्र लिखकर कहा है कि अप्रैल 2026 से आरंभ होने वाली एसआईआर के लिए सभी कार्य जल्द से जल्द पूरा कर लें. सबसे पहले एसआईआर पिछले साल बिहार में कराई गई.

दूसरे चरण में चुनाव आयोग ने 27 अक्टूबर 2025 को 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में एसआईआर का आदेश दिया, जो अब पूर्ण होने के चरण में है. अंतिम तिथि को सबसे अधिक बार उत्तर प्रदेश में बढ़ाया गया. असम में नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजंस की अधूरी प्रक्रिया के कारण कानूनी बाधाएं थीं, इसलिए एसआईआर की जगह एसआर कराया गया था. चुनाव आयोग को यह भी ध्यान में रखना होगा कि अप्रैल में जनगणना का कार्य भी आरंभ होना है.

चूंकि जनगणना व एसआईआर का अधिकतर काम सरकारी अध्यापकों के जिम्मे ही थोप दिया जाता है, इसलिए इस बात पर ध्यान देने की भी आवश्यकता है कि इन कर्मचारियों पर ज्यादा बोझ न पड़े, वैसे ही काम की अधिकता व तनाव की वजह से अनेक बीएलओ ने आत्महत्या की या हृदय रोगों ने समय-पूर्व ही उनकी जान ले ली. चुनाव आयोग ने दोनों रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया और सेंसस कमिश्नर से बैठकें की हैं कि प्रशासनिक संसाधनों के साझा पूल का सही से इस्तेमाल दोनों एसआईआर व जनगणना के लिए कैसे किया जाए,

मालवा- निमाड़ की डायरी

पंधाना छोड़ छाया मोरे भीकनगांव से चुनाव लडऩे के मूड में!

संजय व्यास

निमाड़ की राजनीति अभी तक किसी को भी समझ नहीं आई. खंडवा जिले का पंधाना विधानसभा क्षेत्र तो सबसे विकट स्थिति बनाता है. यहां कोई भी प्रत्याशी दूसरी बार मतदाताओं ने नहीं चुना. भले ही गैप देकर लोगों ने उसे चुन लिया हो. भाजपा ही नहीं, कांग्रेस में भी यही स्थिति है. इस बार भी पंधाना की विधायक छाया मोरे के इसीलिए विधानसभा क्षेत्र बदलने की सुगबुगाहट चल रही हैं. वे मूल रूपसे रहने वाली भी खरगोन जिले के भीकनगांव क्षेत्र की हैं. इसीलिए अगला चुनाव भीकनगांव से लडऩे की जुगत में हैं. वहीं से तैयारी भी चुपचाप कर रही हैं. पंधाना का इतिहास उन्हें पता है.

हालांकि छाया मोरे किस्मत लेकर चुनाव लड़ी थीं. कांग्रेस में रहते हुए विधायक बनने का सपना मुश्किल लग रहा था. कहीं से जुगत जमाई और कांग्रेस छोडक़र भाजपा में आ गईं. कुछ ही महीनों में भाजपा के रनिंग विधायक राम दांगोरे का टिकट काटकर उन्हें भाजपा से टिकट दे दिया गया. ये वही राम दांगोरे हैं, जो इंजीनियर की पदवी रखते हैं. कम उम्र में यह विधायक बने थे. इन्होंने उस वक्त कांग्रेस से चुनाव लड़ रहीं छाया मोरे को ही परास्त किया था. ऐसी परिस्थिति के बावजूद छाया मोरे को टिकट दिया और वह विधायक भी बन गईं. हालांकि बैकग्राउंड के बड़े नेता आज भी कांग्रेस में हैं. छाया मोरे दोनों ही पार्टियों की अच्छी राजनेता बनीं. अब वे भीकनगांव की आदिवासी सीट से चुनाव की तैयारी अंदर ही अंदर कर रही हैं, ऐसी चर्चा है. ऐसा हुआ तो छाया मोरे की राजनीति उनकी मर्जी के मुताबिक सक्सेस रहेगी. पंधाना का क्या, यहां तो कोई नया विधायक भाजपा को मिल ही जाएगा. कांग्रेस के जमाने में तो, जो यहां से जीता वही मंत्री बनता था.

वरिष्ठ पार्षद पद पर नियुक्ति का इंतजार

झाबुआ जिला भाजपा में कार्यकर्ताओं को राजनीतिक नियुक्तियों के द्वार खुलने से अब अपना नंबर आने की आस बंध गई है. विगत कुछ समय में जिला भाजपा के कई कार्यकर्ताओं को विभिन्न मोर्चों और प्रकोष्ठों में पदाधिकारी बनाया जा रहा है. प्रदेश भाजपा द्वारा अपनी टीम में थांदला की महिला नेत्री को प्रदेश मंत्री बनाकर नवाजा गया तो दूसरी ओर अनुसूचित जनजाति मोर्चा में प्रदेश मंत्री के रूप में पूर्व जिला महामंत्री सोम सिंह सोलंकी को प्रदेश मंत्री, कल्याण सिंह डामोर को इसी मोर्चे का प्रशिक्षण वर्ग प्रभारी बनाया गया है. तीन सदस्यों को प्रदेश कार्यकारिणी में स्थान दिया गया है. अजमेर सिंह भूरिया, बहादुर एटीला और रामपाल सिंह चौहान को प्रदेश कार्य समिति में शामिल किया गया. अब कार्यकर्ताओं को जिले की एक नगर पालिका और चार नगर पंचायत में वरिष्ठ पार्षद पद पर नियुक्ति का इंतजार है.

खुद के पांव पर कुल्हाड़ी मार रहे पाटिल!

खंडवा संसदीय सीट पर चुनाव के पहले ही बड़ी उथल-पुथल दिख रही है. कहने को यह सीट खंडवा के नाम से है, लेकिन आयातित दूसरे जिलों के नेता ही इस पर कब्जा जमाते हैं. ज्ञानेश्वर पाटिल छोटे नेता थे, स्व नंदू भैया ने उनकी किस्मत चमका दी. खुद बड़े नेता कहलाने लगे. अब यही बात दूसरे बड़े नेताओं को अखर रही है कि उनसे बड़ा वजूद इनका कैसे हो गया? बड़ी प्लानिंग से इसी रणनीति ने दो गुट बना दिए. इनको लीड एक बड़ी नेत्री कर रही हैं. खंडवा के दो विधायकों के टिकट काटे थे. बुरहानपुर में भी ऐसा ही खेल रचा था. वह भी अब इनके खिलाफ खुलकर उतर गए हैं. इतना ही नहीं, खंडवा और बुरहानपुर के नगर निगम चुनाव में भी उनकी मुखालिफत वाले कुर्सी पा गए. खंडवा और बुरहानपुर में भी जिला अध्यक्ष की कुर्सी पर इनकी मुखालफत के बावजूद दूसरे ही बैठ गए. मतलब साफ समझ में आ रहा है कि वर्तमान सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल की जमावट भविष्य में अपनी ही कुर्सी के लिए घातक सिद्ध हो सकती है. ऐसे में उनके बढ़ते विरोधी इन्हें टिकट मिलने में बाधक बन सकते हैं? खंडवा और बुरहानपुर जिले के अलावा खरगोन व देवास जिले के नेता भी उनकी मुखालिफत में उतर गए हैं. चार जिलों के कुछ क्षेत्र में खंडवा लोकसभा क्षेत्र आता है. बड़ा एरिया भी ज्ञानेश्वर पाटिल कवर नहीं कर पाएंगे. नंदू भैया की जमी जमाई फील्डिंग से इन्होंने पिछली बार भले ही मैच जीत लिया हो, इस बार डगर कठिन रहेगी, क्योंकि खंडवा के दो कॉलोनी काटने वाले लोग बोरों में पैसा रखकर राजनीति करने के मूड में हैं.

-शाहिद ए चौधरी

ट्रंप को अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का झटका

जो भारतीय सामान अमेरिका जा पहुंचा है उस पर टैरिफ लगना निश्चित है. 5 माह तक तो ट्रंप कानून की आड़ लेकर अपने स्टैंड पर कायम रहेंगे लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट में अपने कदम का बचाव कैसे कर पाएंगे? अटार्नी जनरल नील कत्याल ने सुप्रीम कोर्ट में दलील दी कि राष्ट्रपति शक्तिशाली हैं लेकिन अमेरिका का संविधान उनसे भी शक्तिशाली है.

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को उनके ही देश के सुप्रीम कोर्ट ने करारा झटका देते हुए कहा कि उनके प्रशासन द्वारा विभिन्न देशों पर लगाए गए टैरिफ अवैध हैं. अदालत ने 6-3 के बहुमत से टैरिफ रद्द करते हुए ऐसा कदम उठाने के ट्रंप के अधिकारों पर सवालिया निशान लगाया. टैरिफ और पेनाल्टी लगाकर ट्रंप ने अपने अधिकारों की सीमा को पार किया है. अपने अकड़बाज स्वभाव के अनुसार ट्रंप ने सुप्रीम कोर्ट की आलोचना की. उन्होंने जजों को बेवकूफ और विदेशी हितों से प्रभावित बताया. ट्रंप ने जवाबी कार्रवाई करने की घोषणा की और कहा कि उन्होंने 1974 के ट्रेड एक्ट के मुताबिक 10 प्रतिशत का नया वैश्विक टैरिफ लगा दिया है जिसे उन्होंने उसी दिन बढ़ाकर 15 प्रतिशत कर दिया. उन्होंने कहा कि अमेरिका में 22 फरवरी से आने वाले सभी विदेशी सामान पर पहले तय किए गए टैरिफ की बजाय 15 प्रतिशत टैरिफ वसूला जाएगा. यह ट्रेड एक्ट के अनुसार 150 दिनों तक अस्थायी आयात सरचार्ज रहेगा. इस तरह ट्रंप ने अपनी टैरिफ मनमानी के लिए 5 महीने का समय हासिल कर लिया है. इस समय तक हस्ताक्षरित सभी व्यापार समझौतों को ट्रंप ने वैध बताया. अगले माह भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते पर दस्तखत हो जाने की संभावना है. इस हालत में भारत को अमेरिका की कानूनी स्थिति देखते हुए जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और अधिकृत रूप से समझौते को कानूनी रूप देने से पहले और भी सौदेबाजी की जा सकती है. अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने भारत को एक अवसर दिया है कि वह व्यापार सौदे पर हस्ताक्षर करने से पहले अपना पक्ष रखे. ट्रंप ने भी भारत को सख्त सौदेबाज बताया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

महुआ, पूर्व प्रेमी और कुत्ता नहीं मिल पाया संरक्षण का छत्ता

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अंग्रेजी में एक कहावत है जिसका मतलब है कि प्रेमिका को रिझाना है तो उसके कुत्ते से प्यार करो ! एडवोकेट जय अनंत देहाडराय ने अपनी प्रेमिका टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा को हेनरी नामक कुत्ता भेंट किया था. उन्हें उम्मीद थी कि महुआ बड़े प्यार से कुत्ते की देखभाल करेगी, लेकिन जब महुआ दौरे पर रहती हैं तो कुत्ता देहाडराय के पास छोड़ जाती थीं. अब उस श्वान की कस्टडी को लेकर महुआ और देहाडराय के बीच अदालत में विवाद जारी है. महुआ का कहना है कि उसे हर महीने 10 दिन के लिए हेनरी को अपने पास रखने की अनुमति मिलनी चाहिए.'

हमने कहा, 'गिफ्ट में दी गई चीजों पर हक नहीं जताना चाहिए. उपहार दो और भूल जाओ. जब देहाडराय महुआ के पूर्व पार्टनर बन गए तो भेंट किए गए कुत्ते से भी लगाव नहीं रखना चाहिए. इतना ही शौक है तो वह दूसरा कुत्ता खरीद लें.' पड़ोसी ने कहा, 'वह कुत्ता रोटवीलर प्रजाति का है. इस ऊंची नस्ल के कुत्ते को महुआ अपने कब्जे में ही रखना चाहती हैं. जिला अदालत ने महुआ की यह मांग ठुकरा दी कि वह और उनका पूर्व प्रेमी साझा तौर पर कुत्ते को पालें. इस फैसले के खिलाफ महुआ ने दिल्ली हाईकोर्ट में अपील की है.'

हमने कहा, 'क्या अदालत का कीमती वक्त कुत्ते का स्वामित्व तय करने के लिए बर्बाद किया जाना चाहिए? कोर्ट के सामने और भी तो महत्वपूर्ण मामले हैं. इसके अलावा रोटवीलर वन मैन डॉग रहता है. वह सिर्फ अपने मालिक को पहचानता है. घर के अन्य लोगों पर भी वह हमला कर सकता है. वह किसी बच्चे या बुजुर्ग को निशाना बना सकता है. ऐसी घटनाओं के कारण उसे पालने से भी मना किया जा चुका है. ऊंची नस्ल का कुत्ता पालने का मतलब है उसे सुबह, दोपहर और रात में घुमाओ, उसे विशेष महंगा डॉग फूड, प्रोटीन पाउडर दो, हर हफ्ते उसे नहलाओ. उसे मेडिसिन और सप्लीमेंट दो. कान में लोशन डालकर सफाई करो. उसे टिक या जुआं मत होने दो. यह हर महीने हजारों रुपये का खेल है.'

पड़ोसी ने कहा, 'पहले लोग गाय पालते थे लेकिन अब रईसी का मतलब ऊंची नस्ल का कुत्ता पालना हो गया है. रोटवीलर और पिटबुल खतरनाक श्रेणी के कुत्ते माने जाते हैं. उनकी बजाय लेब्राडोर या गोल्डन रिट्रीवर पालना बेहतर है. कुछ नहीं तो चीन निर्मित रोबोडॉग ले आओ जिसे गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने अपना बताकर पेश किया था.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12180 -डॉ. सागर खादीवाला

वाली फसल

ऊपर से नीचे

1. परिहास, हास्यरस प्रधान एक रूपक 2. शांत, जिसका शमन किया गया हो 3. पराजय, हार, माता 4. प्रकाश 6. शीघ्रता से, बिना सोचे समझे (उर्दू) 8. बहने वाला, द्रव 9. आपत्ति, दुख, भूत प्रेत (उर्दू) 10. प्रसिद्ध नामी 12. जुड़ना 15. राह दिखाने वाला (उर्दू) 16. जोश, सुखदायक मनोवेग 20. सहमत, रजामंद

बाएं से दाएं

1. 1. चमकता हुआ, प्रसिद्ध, द्युतिमान (सं.) 4. आयु, अवस्था, वयस 5. कम, थोड़ा, नपातुला (सं.) 6. अनुचित, नामुनासिब (उर्दू) 7. लगातार, निरंतर, सर्वदा 9. बताना, समझाना 11. पुरुष जाति का 12. कपड़े बुनने वाला 13. हिलोर, तरंग 14. सरस्वती, एक प्रकार की वीणा 17. किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराने वाला शब्द, संज्ञा, कीर्ति 18. प्रत्येक, छीनने या हरण करने वाला 19. कैकई की दासी जो कुबड़ी थी 21. दबाव 22. खूबसूरती, शोभा (उर्दू) 23, वसंत ऋतु में काटी जाने

Solution 12179

म	सो	स	ना	■	फ	ल	क
न	■	द	ल	दा	र	■	वि
च	तु	र	■	स	मा	न	ता
ला	म	■	हि	■	इ	ष्ट	■
■	■	■	आ	दे	श	■	इ
आ	ह	त	■	न	■	आ	जा
दा	वा	द	ल	■	फा	लि	ज
न	■	ना	च	यां	ग	■	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी, पद का लाभ प्राप्त होगा, व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी, धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, वर्ष के अन्त में शत्रु कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, किन्तु निवारण भी होगा, व्यर्थ के वाद विवाद एवं व्यय से बचने का प्रयास करें. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ होगा, सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु कष्ट होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मांगलिक कार्यों में खर्च होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को उन्नति के योग हैं, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यश और सम्मान में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये पुरूषार्थ का लाभ होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्ववान होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम, बाद में स्वास्थ्य सामान्य रहेगा. कामकाज में निपुण होशियार होगा. खेलों के प्रति अधिक रूचि रहेगी.

मेष- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहेंगे. कुटुम्बियों से सुख मिलेगा. आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी. मनोरंजन के कार्यों में सफलता मिलेगी.

वृषभ- मधुरवाणी से संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, जोखिम के क्षेत्र में अच्छे लाभ के अवसर मिलेंगे. कामकाज पूरा होगा. कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

मिथुन- निकट संबंधों में पारदर्शी व कर्त्तव्यनिष्ठ बनें, स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें. भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. खर्च की अधिकता रहेगी.

कर्क- सगे संबंधों के अनुकूल नैतिक कर्त्तव्यों का पालन करें. नाजुक संबंधों में छोटी मोटी को दिल से न लगायें. लेखनादि के कार्यों में सफलता मिलेगी.

सिंह- बीती बातों को भूलने की चेष्टा करें, पुराने संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. शत्रुओं पर विजय मिलेगी. भागदौड़ अधिक करना होगी. व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

कन्या- सामान्य दिनचर्या व्यतीत हो रहे जीवन में उत्साह का अभाव रहेगा. पारिवारिक कार्यों की चिन्ता रह सकती है. कुछ कार्य अधूरे रह सकते हैं.

तुला- किसी नई योजना की ओर केन्द्रित होंगे. महत्वाकांक्षा ऊँची प्रगति के लिये प्रेरित करेंगी. नया कार्य सामने आ सकता है. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

वृश्चिक- जरूरी कार्य सार्थक होने का योग है. नौकरी में वातावरण सुखद रहेगा. कोई समस्या हल होगी. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा.

धनु- अपने भविष्य को सुनियोजित करें. भविष्य संबंधी चिन्तायें मन में प्रभावी रहेंगी. राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. व्यापार व्यवसाय लाभकारी रहेगा.

मकर- परिजनोंके सुखद दुख से प्रभावित मन परिवार को एक जुट रखने पर केन्द्रित रहेगा. पुरूषार्थ बना रहेगा. किया गया प्रयास सार्थक होगा. मान सम्मान मिलेगा.

कुम्भ- किसी नये कार्य की पूर्ति होगी. भावुकता व्यवहारिक जगत के अनुकूल चलनेकी चेष्टा करें. विरोधियों का पराभव होगा. मानसिक सुख मिलेगा.

मीन- किसी संबंध को लेकर पूरे परिवार में विरोध का सामना करना पड़ेगा. स्वजनों की आत्मीयता में वृद्धि होगी. मान सम्मान लेखन आदि कार्यों में प्रयास सार्थक होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

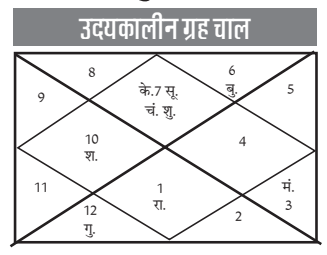

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल सप्तमीं भौमवासरे प्रातः 7/9 तदुपरि अष्टमीं तिथौ रातअंत 4/47, कृतिका नक्षत्रे दिन 3/20, ऐन्द्र योगे प्रातः 7/52 तदुपरि वैधृति योगे रातअंत 4/45, वणिज करणे सू.उ. 6/19, सू.अ. 5/41, चन्द्रचार वृषभ, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल सप्तमीं/अष्टमीं को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, अलसी, गुड़ खांड, अरंडी, बिनौला, घी, तेल, में तेजी होगी. रूई, कपास, से बनी वस्तुओं में चंदन के भाव में तेजी होगी. भाग्यांक 7586 है.

SUDOKU 7312

		4			9			
	2			8	4			
8						3		
							9	4
	3						7	
5	6							
		7						9
			2	5			8	
			6			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7311

5	9	1	2	8	4	3	6	7
6	4	2	3	5	7	9	1	8
8	3	7	9	6	1	4	2	5
4	7	5	8	2	6	1	9	3
3	6	9	7	1	5	8	4	2
1	2	8	4	3	9	7	5	6
7	5	6	1	9	8	2	3	4
9	8	3	5	4	2	6	7	1
2	1	4	6	7	3	5	8	9